Department of political science

D.B. College, Jaynagar

By-Dr. A.K. YADAV
Asstt. Pro. GPTT

B.A. Part-III public Administration

Date-12/09/2020

Lecture-12

द्वितीय चरण (1927-1937) = प्रशासन के सार्वभौमिक सिद्धान्तों पर जोर =

यह चरण लोक प्रशासन के विकास में स्वर्णिम युग माना जाता है। इस चरण की व्यस्थित शुरुवात F. विलोबी द्वारा प्रकाशित principal of public Administration से मानी जाती है। विलोबी ने अपनी पुस्तक में इस बात पर बल दिया की लोकप्रशासन के अनेक सिद्धान्त होते है। जिन्हे कार्यान्वित करने से लोक प्रशासन में अपेक्षित सुधार हो सकता है। विलोबी के इस सैद्धान्तिक विचारों की अवधारणा को लोक प्रशासन के सम्बन्ध में प्रतिपादित विभिन्न सिद्धान्तो ने शक्ति प्रदान की वे सिद्धान्त F.W. Tailar की "The principal of scientific management" हेनरी फेयोल द्वारा General and Industrial management, मुने तथा रिले की onward industry, M.P. Follet की the Creative experience लुथर गुलिक तथा उर्विक द्वारा सम्पादित paper on the science of Administration तथा Max waver के नौकरशाही सिद्धान्त से विशेष रूप से प्रभावित थे। इस सभी कार्यो में लोक प्रशासन को उन सिद्धान्तो पर आधारित होने के कारण उसके वैज्ञानिक पक्ष पर विशेष बल दिया गया।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

तृतीय चरण (1938- 1947) प्रशासनिक व्यवहार का अध्ययन

लोक प्रशासन विषय के विकास की तृतीय चरण लोक प्रशासन के क्षेत्र में विध्वंसकारी रहा है। क्योंकि प्रशासन के सिद्धान्तों को सिर्फ ही चुनौती मिलने लगी। लोक प्रशासन विषय के विकास में तृतीय चरण की शुरुआत 1938 में चेस्टर बर्नार्ड की पुस्तक The functions of executive से मानी जाती है। चेस्टर बर्नार्ड स्वयं एक अनुभवी प्रशासक थे उनके अनुसार प्रशासन एक सहकारी प्रक्रिया व व्यवस्था है। जिसमें व्यक्तियों के आचरण प्रशासकीय कार्यों को विशेष रूप से प्रभावित करता है। बर्नार्ड के विचारों के फलस्वरूप लोक प्रशासन के सिद्धान्तवादी दृष्टिकोण पर प्रहार शुरु हुआ। 1946 में हर्बर्ट साइमन ने अपनी पुस्तक proverbs of Administration प्रकाशित की जिसमें उन्होंने तथा कथित सिद्धान्तवादी दृष्टिकोणों की धज्जी उड़ाई तथा उसे मुहावरे की संज्ञा दी। आगे साइमन ने 1947 में प्रकाशित पुस्तक Administrativ Rehaviour की रचना की जिसमें उन्होंने प्रशासनिक संगठन को निर्णय निर्माण की व्यवस्था बताया। 1947 में ही रावर्ट डहल ने एक लेख The science of public Administration three problems लिखा जो अमेरिकन public Administration Review में प्रकाशित हुआ इस लेख में उन्होंने सिद्धान्तवादियों की इन मान्यताओं का कि लोक प्रशासन एक विज्ञान है जोरदार खण्डन किया और लोक प्रशासन को सिद्धान्त की खोज में प्रमुख बाधाओं का सामना करना बताया है। इस प्रकार लोक प्रशासन के विकास का तीसरा चरण चुनौतियों तथा आलोचनाओं से भरा हुआ माना जाता है।

Scanned with CamScanner